## अशेष्ट प्रार्थना - मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगती का
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढ़ाँकू सभी का।
बोलूं प्यारे वचन हित के, आपका रूप घ्याऊं।
तोलों सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जोलों न पाऊं ।।९।।

## आर्य्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौ प्रभु जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।१०।।
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमाकरो प्रभुसो सब, करुणाकरि पुनिछुडाहु भवदुख से।।११।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तब चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मो का क्षय सुबोध सुखकारी।।१२।।

( परिपुष्पांजली क्षेपण )

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहियें।

# भजन

नाथ ! तेरीपूजा को फल पायो, मेरेयो निश्चय अब आयो।
मेंढ़क कमल पांखुड़ी मुख ले वीर जिनेश्वर धायो।
श्रेणिक गजके पग तल मूवो, तुरत स्वर्ग पद पायो। नाथ...
मेनासुन्दरी शुभ मन सेती, सिद्ध चक्र गुण गायो।
अपने पति को कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो। नाथ...
अष्टापद में भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो।
अषटद्रव्य से पूजा प्रभु जी, अवधिज्ञान दरशायो। नाथ...
अंजन से सब पापी तारे मेरो मन हुलसायो।
महिमा मोटि नाथ तुम्हारी, मुक्तिपुरी सुखपायो। नाथ...
थकि थकि हारे सुर नर खगपति, आगम सीख जतायो।
देवेन्द्रकीर्ति गुरु ज्ञान 'मनोहर', पूजा ज्ञान बतायो। नाथ...